

हमारे देश में विभिन्न प्रकार की कृषि पद्धतियां पद्धति एवं फसल प्रणालियां हैं, जिनको स्थानीय जलवायु एवं किसानों के पास उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है। धान्य फसलों की खेती भारत के लगभग सभी हिस्सों में होती है और यह देश की खाद्यान्न सुरक्षा एवं संप्रभुता के लिए अति आवश्यक है। साथ ही किसान परिवारों के रोजमर्रा की खाद्यान्न आवश्यकताओं की पूर्ति भी इसके माध्यम से होती है। लेकिन कालांतर में कृषि आदानों की कीमतों में वृद्धि और उसके अनुरूप कृषि उत्पादों के मूल्यों में वृद्धि नहीं होने की वजह से कई फसल प्रणालियों से प्राप्त आमदनी लगातार घटती जा रही है। इससे किसान कृषि कार्यों से विमुख होने लगे हैं। फसल प्रणालियों में धान-गेहूं फसल प्रणाली महत्वपूर्ण है। इसे देश की खाद्यान्न सुरक्षा के दृष्टिकोण से हमेशा राष्ट्रीय प्राथमिकता दी जाती रही इसको आर्थिक दृष्टिकोण से लाभप्रद और टिकाऊ बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। हाल के वर्षों में धान की कीमतों में उतार-चढ़ाव की वजह से यह और कठिन हो गया है। आज भारत में धान-गेहूं फसल प्रणाली के अंतर्गत 10 मिलियन हैक्टर क्षेत्रफल आता है। अतः इतने बड़े भू-भाग में अपनायी जाने वाली फसल प्रणाली को मुनाफे का सौदा बनाना और लंबे समय तक बनाये देश हित में बहुत जरूरी है। कृषि मशीनीकरण है जरूरी अतः इस फसल प्रणाली के अंतर्गत प्रयोग की जाने वाली सभी तकनीकों/ध्विकल्पों पर नए सिरे से विचार कर उनको अधिकाधिक क्षेत्रों में प्रश्रय देना आज की प्राथमिकता है। किसानों की आमदनी बढ़ाने के तीन महत्वपूर्ण पहलू निम्न हैं : उत्पादन लागत को कम करना उत्पादन बढ़ाना समुचित मूल्य मुहैया कृषि लागत को कम करना धान-गेहूं फसल प्रणाली के अंतर्गत उत्पादन लागत को कम करने के लिए कई तकनीकें कारगर हैं, जिनमें जीरो टिलेज, टर्बो हैप्पी सीडर, रोटरी डिस्क से बिजाई और रोटोवेटर से गेहूं की बिजाई तथा धान की सीधी बिजाई तकनीकें उल्लेखनीय हैं। जीरो टिलेज धान की कटाई के बाद बिना जुताई जीरो टिलेज बीज संग उर्वरक ड्रिल द्वारा गेहूंकी बिजाई करने से किसान 3,500-4,000 रुपये प्रति एकड़ की बचत कर सकता है। साथ ही मृदा सुधार, पर्यावरण को लाभ के साथ-साथ धन, समय व ईंधन की भी बचत की जा सकती है। यह तकनीक धान की हाथ से कटाई किए गए खेतों में गेहूं की बिजाई के लिए वरदान है। उत्तरी एवं पूर्वी भारत में इस तकनीक को अपनाने की अपार संभावनाएं के लिए कंबाइन का प्रयोग बढ़ा है। ऐसे में धान के खेतों में ही फसल अवशेष काफी मात्रा में खेत में रह जाता है, जिससे निजात पाने के लिए किसान उसे जला देते हैं। टर्बो हैप्पी सीडर धान के अवशेष वाले खेतों में बिना जुताई किए गेहूं की बिजाई की एक कारगर तकनीक है। इस तकनीक से न सिर्फ पर्यावरण को बचाया जा सकता है बल्कि इसका अंगीकरण कर किसान भाई प्रति हैक्टर 4,000-45,00 रुपये/ की बचत है।



लेखक

डॉ० अनिल कुमार, वैज्ञानिक (उद्यान) प्रधान, के०वी०के०, धनबाद

डॉ० आदर्श कुमार श्रीवास्तव, वैज्ञानिक (प्रसार शिक्षा) के०वी०के०, धनबाद

डॉ० नवीन कुमार, वैज्ञानिक (पौधा संरक्षण) के०वी०के०, धनबाद

डॉ० नन्दना कुमारी, वैज्ञानिक (गृह विज्ञान) के०वी०के०, धनबाद

श्री रमन कुमार श्रीवास्तव (कार्यक्रम सहायक) के०वी०के०, धनबाद

श्री संजय कुमार (प्रक्षेत्र प्रबंधक) के०वी०के०, धनबाद

श्री देव प्रकाश शुक्ला (सहायक) के०वी०के०, धनबाद

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनबाद

मोबाईल नं० : +91 9431176741

तकनीकी प्रसार पुस्तिका - 08/2025-26

गेहूं की उन्नत खेती



कृषि विज्ञान केन्द्र

धनबाद, बलियापुर

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची

उन्नत प्रभेद

अवस्था	उन्नत प्रभेद	पट्टिवृत्ता अवधि (दिन)	औसत उपज (कि.ग्रा./हे.)	बोआई का समय
समय से बुआई सिंचित अवस्था में	कै. 1006, कै. 030, एच.डी. 2967, डी. बी. डब्ल्यू. - 39, डी.बी.डब्ल्यू - 187	120-130	45-50	नवम्बर माह का प्रथम पखवाड़ा
समय से बुआई असिंचित अवस्था में	कै. 1317, डी.बी. 3171, एच.आई. 1612	130-140	20-25	नवम्बर माह का प्रथम पखवाड़ा
देर से बुआई सिंचित अवस्था में	एच.आई.- 1563, एच.आई.- 1544, डी.बी.डब्ल्यू 107, एच.डी. 3118, एम.ए.सी.एस.- 6222	110-115	40-50	दिसम्बर माह का प्रथम पखवाड़ा

बीच उपचार

प्रायः देखा गया है कि किसान भाई बिना उपचार किए ही बिजाई कर देते हैं। कुछ ऐसे रोग हैं, जो बीज जानित होती हैं जिसमें कडुवा एक प्रमुख रोग है। अतः इसके लिए समुचित रसायनों का प्रयोग करें। आजकल जैव उर्वरकों से भी बीच उपचार किया जा रहा है और इसका लाभकारी परिमाण किसान के खेतों पर देखने को मिला है। ये जीवाणु खाद फॉस्फोरस की उपलब्ध को बढ़ा देते हैं। अतः गेहूँ के बीच को एजोटोबैक्टर एवं फॉस्फोरस घुलनशील बैक्टीरिया से अवश्य उपचारित करें। इनके प्रयोग मात्र से 5-7 प्रतिशत तक की उपज वृद्धि प्राप्त की जा सकती है। एक हैक्टर खेत के लिए समय से बुआई की दशा में 100 कि.ग्रा. तथा पिछेती दशा में 125 कि.ग्रा. बीच का प्रयोग करना चाहिए। बीच दर बढ़ाने से उत्पादन पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है अतः संस्तुत बीच दर के प्रयोग में ही समझदारी है। अच्छी गुणवत्ता वाले प्रमाणित बीजों का उपयोग करें। बुवाई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 2 ग्राम थायरम या 2.50 ग्राम मैन्कोजेब से उपचारित करें। दीमक नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफोस के 4 मिलीलीटर घोल और जैविक उर्वरक जैसे एजोटोबैक्टर और पी.एस.बी. कल्चर के तीन-तीन पैकेट का उपयोग करें, फिर बीज को छाया में सुखाकर बुवाई करें। बीज की मात्रा: बीज की मात्रा बुवाई के समय और किस्म पर निर्भर करती है। सामान्य समय पर बुवाई के लिए 100 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है। यदि बुवाई में देरी हो, तो मात्रा बढ़ाकर 125 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर कर देनी चाहिए। बुवाई की विधि: गेहूँ की बुवाई पंक्तियों में की जानी चाहिए। यदि संभव हो तो पलेवा (बुवाई से पहले खेत की सिंचाई) करके बोएं। पंक्तियों के बीच की दूरी 22.5 सेमी होनी चाहिए और बीज की गहराई 5 सेंटीमीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए।

मिट्टी की आवश्यकताएँ:

यह फसल दोमट, बलुई दोमट और चिकनी दोमट मिट्टी में अच्छी तरह से उगती है। उचित जल निकासी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि अत्यधिक जल संचय फसल की वृद्धि को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

अनुशंसित किस्में (उन्नत उन्नतशील):

राज-1482: 120-125 दिनों में परिपक्व हो जाती है, प्रति हेक्टेयर 40-45 क्विंटल उपज देती है, और इसकी बुवाई नवंबर के दूसरे और चौथे सप्ताह के बीच की जानी चाहिए। राज-3765: 115-125 दिनों में परिपक्व हो जाता है, प्रति हेक्टेयर 45-50 क्विंटल उपज देता है, और दिसंबर के दूसरे सप्ताह तक बोया जा सकता है। राज-3077: 120-125 दिनों में परिपक्व हो जाता है, सफेद आटा पैदा करता है, और इसे हल्की खारी मिट्टी में उगाया जा सकता है, जिससे प्रति हेक्टेयर 45-50 क्विंटल की उपज प्राप्त होती है।

अपना खेत अपना बीज

गेहूँ की खेती करने वाले किसानों के लिए बीज उत्पादन में क्षमता विकास अति आवश्यक है। बिजाई से पूर्व सभी किसान नयी प्रजातियों का बीज खरीदने के लिए विभिन्न संस्थानों के चक्कर काटते रहते हैं और उनको वांछित किस्म का बीज नहीं मिल पाता है। इसी परेशानी को ध्यान में रखकर हमारे संस्थान ने "अपना खेत अपना बीज" कार्यक्रम का सूत्रपात किया है, जिसके माध्यम से किसानों को प्रशिक्षित कर गेहूँ का बीज उत्पादन किया जा रहा है। इसमें महिला किसानों को भी जोड़ा गया है। साथ ही प्रगतिशील किसानों के खेतों पर बीज उत्पादन का कार्य भी संस्थान संपादित कर रहा है। इससे किसान अपने खेत के लिए बीज का उत्पादन कर सकता है और मुनाफा कमा सकता है और इस प्रकार प्रत्येक वर्ष बीज खरीदने पर होने वाले अतिरिक्त खर्च की बचत हो जाती है। इस कार्य में किसानों का बीज उत्पादक समूह बनाकर उसका पंजीकरण करवाकर एक बीज कंपनी की स्थापना भी की जा सकती है और किसानों को एक आम किसान से सहउद्यमी या व्यापारी बनने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। बाजार में उनका एक ब्रांड स्थापित किया जा सकता है। इससे एक तरफ मुनाफा होगा वहीं दूसरी तरफ अच्छी गुणवत्ता का बीज भी उनको उपलब्ध होगा।

इष्टतम सिंचाई कार्यक्रम: सर्वोत्तम परिणामों के लिए पाठ में कुल छह सिंचाई की सिफारिश की गई है।

पहला चरण: बुवाई के 20-25 दिन बाद (क्राउन रूट इनिशिएशन स्टेज)।

दूसरा चरण: बुवाई के 45-50 दिन बाद (कलरिंग अवस्था)।

तीसरा चरण: बुवाई के 65-70 दिन बाद (जोड़ने की अवस्था)।

चौथा चरण: बुवाई के 85-90 दिन बाद (बालियां निकलनेधूटी बनने की अवस्था)।

पांचवां चरण: बुवाई के 100-110 दिन बाद (दूध देने की अवस्था)। अंतिम अवस्था: बुवाई के 115-120 दिन बाद (आटे का रसधरिपक्वता अवस्था)। सीमित जल परिदृश्य: यदि पानी की कमी है, तो यह सिंचाई को चार महत्वपूर्ण समयांतक सीमित रखने की सिफारिश करता है :

